देवनागरी उर्दू

इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़

इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़

पिछले सबक़ में, हमने यह सीखा कि **इंजील-ए-शरीफ़** में कोई तब्दीली नहीं की गई है। यह **शैतान** की तरफ से फैलाया हुआ झूट है कि क़ादिर-ए-मुतलक़ की तरफ़ से नाज़िल की गई इस ख़ूबसूरत किताब को बदल दिया गया है या मंसूख किया गया है। जैसा कि **हज़रत ईसा अल-मसीह** ने इंजील-ए-मत्ती 24:35 में फ़रमाया: “आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी। '

यह सबक़, हमें इंजील-ए-शरीफ़ की तारीख़ और उसके मज़ामीन के बारे में ज़्यादा मालूमात देता है।

ख़ुदा ने **रूह-उल-क़ुद्स** के ज़रिये **हज़रत ईसा अल-मसीह** के **रसूलों** के वसीले से इंजील-ए-शरीफ़ को नाज़िल फ़रमाया। ख़ुदा की तरफ़ से नाज़िल की गई इंजील-ए-शरीफ़ सबसे पहले **यूनानी ज़बान** में लिखी गई। आज भी बहुत से लोग इसे यूनानी ज़बान में पढ़ते हैं और उसका मुताला करते हैं।

बेशक़, कुछ लोगों को इंजील-ए-शरीफ़ के बारे में इस वजह से इश्तिबाह यानी शक हुआ है कि इसका तर्जुमा बहुत सी दूसरी ज़बानों में किया गया है। लेकिन जब किसी किताब का तर्जुमा किया जाता है, तो असल ज़बान में मौजूद मज़मून हरगिज़ नहीं बदलता। इंजील-ए-शरीफ़ के यूनानी नुस्ख़े में कोई तब्दीली नहीं हुई है।

इंजील-ए-शरीफ़ के **सत्ताईस हिस्से** हैं, जिन्हें हम किताबें कहते हैं। पहले चार हिस्से **चार इंजीलों** पर मुश्तमिल हैं, जो हज़रत ईसा अल-मसीह की ज़िंदगी और उनकी तालीमात का बयान पेश करते हैं। ये हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में चार चश्मदीद गवाहियाँ हैं, जिन्हें **हज़रत मत्ती, मरक़ुस, लूक़ा और यूहन्ना** (रज़ियल्लाहु अन्हुम) ने तहरीर किया।

कुछ लोग इस बात पर उलझन का शिकार हो जाते हैं कि चार इंजीलें क्यों हैं। क़ादिर-ए-मुतलक़ ने चार इंजीलें इस लिए अता की हैं कि ये इंजील-ए-शरीफ़ की सच्चाई के चार गवाह हैं। अदालत में अक्सर एक ही गवाही क़ाबिले-क़बूल नहीं मानी जाती, लेकिन जब चार ईमानदार आदमी एक साथ गवाही दें, तो वह गवाही साबित हो जाती है। इसी तरह ख़ुदा ने अपने रहम में चार गवाहियाँ दी हैं, ताकि हम हज़रत ईसा अल-मसीह की सच्चाई के बारे में पूरा यक़ीन रख सकें।

चार इंजीलों के बाद **रसूलों के आमाल** की किताब आती है। “Apostles” अंग्रेज़ी लफ़्ज़ है, जिसका मतलब **रसूल** है। यह किताब इस बात की गवाही देती है कि कैसे हज़रत ईसा अल-मसीह आसमान पर उठा लिए गए और फिर अपने काम को जारी रखने के लिए रूह-उल-क़ुद्स को अपने रसूलों पर नाज़िल किया।

इसके बाद आने वाली **इक्कीस किताबें** रसूलों के वो इल्हामी ख़तूत हैं जो उन्होंने हज़रत ईसा अल-मसीह के इब्तिदाई पैरौकारों को लिखे। ये तमाम लोग हज़रत ईसा अल-मसीह की क़ियामत के चश्मदीद गवाह थे। जो कुछ उन्होंने लिखा, उसमें रूह-उल-क़ुद्स उनकी रहनुमाई कर रहा था। **रसूल पतरस** (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने **दूसरा पतरस 1:20–21** में इसके बारे में लिखा: “किताब-ए-मुक़द्दस की कोई नुबूवत नबी की अपनी ताबीर से नहीं होती, क्योंकि कोई नुबूवत इंसानी मरज़ी से नहीं आई, बल्कि इंसान रूह-उल-क़ुद्स की हिदायत से ख़ुदा की तरफ़ से बोलते रहे।”

इंजील-ए-शरीफ़ की यह आयत गवाही देती है कि किस तरह ख़ुदा ने रसूलों की रहनुमाई की और उन्हें कलाम-ए-ख़ुदा लिखने के लिए क़ायम किया। इंजील-ए-शरीफ़ की आख़िरी किताब को **मुकाशफ़ा** कहा जाता है, जो **यौम-ए-हिसाब** के बारे में गवाही देती है।

www.taleemulkalam.org

कुछ लोगों ने इंजील-ए-शरीफ़ के इन हिस्सों पर एतराज़ किया है और यह कहा है कि यह उनकी तवक़्क़ोआत से मुख़्तलिफ़ हैं। वे कहते हैं कि इंजील एक ही किताब होनी चाहिए थी जो सीधे हज़रत ईसा अल-मसीह पर नाज़िल हुई हो। लेकिन हक़ीक़त यह है कि इंजील-ए-शरीफ़ शुरू से ही इन सत्ताईस किताबों पर मुश्तमिल रही है। यह रूह-उल-क़ुद्स की वह गवाही है जो रसूलों के ज़रिये हज़रत ईसा अल-मसीह के बारे में दी गई।

आज इंजील-ए-शरीफ़ की तक़रीबन **5,800 क़दीम यूनानी नुस्ख़ें** मौजूद हैं, और इसके अलावा **15,000** से ज़्यादा दूसरी क़दीम नुस्ख़ें और हवाले पाए जाते हैं। इन तमाम क़दीम नुस्ख़ें में यही सत्ताईस किताबें मौजूद हैं। इनमें से बहुत सी नुस्ख़ें क़ुरआन से भी काफ़ी पहले की हैं। ये नुस्ख़ें क़ुरआन के आने से पहले भी वही थीं और उसके बाद भी वही रहीं।

पिछले सबक से, याद रखिए कि क़ुरआन कम अज़ कम सौ मर्तबा इस बात की गवाही देता है कि इंजील-ए-शरीफ़ **कलाम-ए-ख़ुदा** है। क़ुरआन उसी इंजील-ए-शरीफ़ की मौजूदगी की गवाही देता है जो सत्ताईस किताबों पर मुश्तमिल है और जो क़ुरआन से पहले मौजूद थी।

इंजील-ए-शरीफ़ की सबसे मशहूर क़दीम नुस्खों में से एक को **कोडेक्स सीनाइटिकस** कहा जाता है, जिसे तक़रीबन **300 ईस्वी** में नक़ल किया गया था और आज यह **ब्रिटिश लाइब्रेरी, लंदन** में मौजूद है। एक और क़दीम नुस्खे **कोडेक्स वेटिकानस** है, जो तक़रीबन उसी दौर की है और **वेटिकन लाइब्रेरी, रोम** में रखी गई है।

मेरा मक़सद यह है कि आज भी ऐसी तक़रीबन 5,800 क़दीम नुस्ख़ें मौजूद हैं। हमें उन तक रसाई हासिल है और हम उनका मुताला करते हैं। मैंने ख़ुद इन हाथ से लिखे हुए नुस्ख़ों की तस्वीरों का मुताला किया है। आप भी इन तमाम नुस्ख़ों के हर सफ़हे की तस्वीरें इंटरनेट पर देख सकते हैं। बस “The Center for the Study of New Testament Manuscripts” तलाश कीजिए, या सीधे **www.csntm.org** पर जाइए।

याद रखिए, क़ुरआन **सूरह यूनुस**, जो दसवीं सूरह है, उसकी **आयत 94** में फ़रमाता है:

“अगर तुम उस चीज़ के बारे में शक में हो जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, तो उनसे पूछो जो तुमसे पहले किताब पढ़ते चले आ रहे हैं। बेशक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ तुम्हारे पास आ चुका है, पस शक करने वालों में से न बनो।”

क़ुरआन हमें दावत देता है कि हम पहले की किताबों — यानी **तौरात, ज़बूर और इंजील-ए-शरीफ़** — की तालीमात की तहक़ीक़ करें। इंजील-ए-शरीफ़ में कोई तब्दीली नहीं की गई है। आज भी वह वैसी ही है जैसी शुरू में नाज़िल की गई थी। मेहरबानी करके अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल की गई इस ज़बरदस्त और बामक़सद वही को पढ़िए और उसकी तहक़ीक़ कीजिए।

www.taleemulkalam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें............